Also Available as
e-Book
www.ebooks.upkar.in

उपकार

उत्तर प्रदेश/उत्तराखण्ड

शिक्षक पात्रता परीक्षा

कक्षा I-V के लिए

पर्यावरण अध्ययन

धीरज पाण्डेय

उपकार

उत्तर प्रदेश/उत्तराखण्ड
शिक्षक पात्रता परीक्षा
पर्यावरण अध्ययन

कक्षा I–V के लिए

लेखक

धीरज पाण्डेय

उपकार प्रकाशन, आगरा-2

Introducing Direct Shopping

Now you can purchase from our vast range of books and magazines at your convenience :

- **Pay by Credit Card/Debit Card or Net Banking facility on our website *www.upkar.in*** ***OR***
- **Send Money Order/Demand Draft of the print price of the book favouring 'Upkar Prakashan' payable at Agra. In case you do not know the price of the book, please send Money Order/Demand Draft of ₹ 100/- and we will send the books by VPP (Cash on delivery).**

(Postage charges FREE for purchases above ₹ 100/-. For orders below ₹ 100/-, ₹ 20/- will be charged extra as postage)

© प्रकाशक

प्रकाशक

उपकार प्रकाशन

2/11 ए, स्वदेशी बीमा नगर (शाह सिनेमा के सामने), **आगरा**–282 002

फोन : 4053333, 2530966, 2531101; **फैक्स** : (0562) 4053330

E-mail : care@upkar.in, **Website :** www.upkar.in

ब्रांच ऑफिस :

4845, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110 002
फोन : 011–23251844/66

पारस भवन (प्रथम तल), खजांची रोड, पटना–800 004
मोबा. : 9334137572

16-11-23/37, मूसारामबाग, टीगन गुडा आर.टी.ए. ऑफिस के सामने मेन रोड (आन्ध्रा बैंक के बगल में), हैदराबाद–500 036 (तेलंगाना) **फोन** : 040–24557283

H-3, ब्लॉक-B, म्यूनिसिपल प्रीमिसेस No. 15/2, गालिफ स्ट्रीट, पी. एस. श्यामपुकुर, कोलकाता–700 003 (W.B.)
फोन : 033–25551510

B-33, ब्लंट स्क्वायर, कानपुर टैक्सी स्टैण्ड लेन, मवइंया, लखनऊ–226 004 (U.P.)
फोन : 0522–4109080

8-310/1, ए. के. हाउस, हीरानगर, हल्द्वानी, जिला–नैनीताल–263 139 (उत्तराखण्ड)
मोबा. : 7060421008

1461, जूनी शुक्रवारी, सक्करदरा रोड, हनुमान मन्दिर के सामने, नागपुर–440 009 (महाराष्ट्र)
फोन : 0712–6564222

30-31, जिन्सी हाट मैदान, बाबा रामदेव मन्दिर के निकट, मलहारगंज, इन्दौर–452 002 (M.P.)
फोन : 9203908088

- *इस पुस्तक को प्रकाशित करने में प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है, फिर भी किसी त्रुटि के लिए प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होगा.*
- *इस पुस्तक को अथवा इसके किसी अंश को बिना प्रकाशक की लिखित अनुमति के, किसी भी रूप–फोटोग्राफी, विद्युत-ग्राफिक, यान्त्रिकी अथवा अन्य रूप में किसी भी प्रकार से उपयोग के लिए नहीं छापा जा सकता है.*
- *किसी भी परिवाद के लिए न्यायिक क्षेत्र केवल आगरा ही होगा.*

ISBN : 978-93-86791-56-6

Code No. 2519

मुद्रक : उपकार प्रकाशन (प्रिंटिंग यूनिट) बाई-पास, आगरा

विषय-सूची

1. परिवार और मित्र 3–8
2. सम्बन्ध/नातेदारी 9–11
3. कार्य एवं खेल 12–18
4. पशु 19–22
5. पेड़-पौधे 23–31
6. भोजन/आहार 32–38
7. आश्रय/मकान 39–41
8. जल/पानी 42–45
9. भ्रमण/यात्रा 46–51
10. वे चीजें जो हम बनाते हैं और करते हैं 52–57
11. पर्यावरणीय अध्ययन का शिक्षाशास्त्र एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया 58–64
12. पारिस्थितिकी तन्त्र 65–67
13. पर्यावरण सम्बन्धी विविध तथ्य 68–72

पर्यावरण अध्ययन

1

परिवार और मित्र

प्राचीनतम व सर्व साधारण मानव संस्था 'परिवार' वह सबसे अधिक महत्वपूर्ण समूह है जिससे हम सब लोग जुड़े हैं. हममें से प्रत्येक एक परिवार में पैदा होता है, जिसमें माता-पिता, दादा-दादी, चाचा-चाची व भाई-बहन आदि होते हैं. इन सबके बीच हम स्वयं को सुरक्षित, वांछित व स्नेहयुक्त महसूस करते हैं. परिवार में हमारी देखभाल होती है व हम आर्थिक व भावनात्मक रूप से सुरक्षित रहते हैं. परिवार में हमें दूसरों से सम्बन्ध बनाना, दूसरों से व्यवहार करना, अपने बुजुर्गों का आज्ञापालन करना व उनका सम्मान करना सिखाया जाता है. परिवार हमें अपने रीति-रिवाजों व संस्कृति को सीखने में मदद करता है जो हमें पीढ़ी-दर-पीढ़ी मिलते चले आ रहे हैं.

- परिवार सार्वभौमिक होते हैं और इसमें विवाहित पुरुष, महिला व उनके बच्चे शामिल होते हैं.
- परिवार का अर्थ है कुछ सम्बन्धित लोगों का समूह जो एक ही घर में रहते हैं.
- परिवार के सदस्य, परिवार से जन्म, विवाह व गोद लिए जाने से सम्बन्धित होते हैं. इससे परिवार की तीन विशेषताएँ पता चलती हैं.

ये हैं–दम्पत्ति को विवाह करके पति-पत्नी का नैतिक दर्जा प्राप्त होता है और वे शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करते हैं. दूसरा, परिवार का अर्थ है इसके सभी सदस्यों के लिए एक ही आवासीय स्थान होना. निःसन्देह. ऐसा भी देखा गया है कि कभी-कभी परिवार के एक या अधिक सदस्यों को अस्थाई रूप से काम के लिए घर से दूर भी रहना पड़ सकता है. उसी प्रकार वृद्ध माँ-बाप, चाचा-ताऊ और उनके बच्चे भी परिवार का हिस्सा होते हैं.

तीसरा, परिवार में न केवल विवाहित दम्पत्ति होते हैं, बल्कि बच्चे भी होते हैं–स्वयं के या दत्तक (गोद लिए गए). अपने बच्चों को दम्पत्ति जन्म देते हैं और दत्तक बच्चे दम्पत्ति द्वारा कानूनन गोद लिए जाते हैं.

परिवार समाज की पहली संगठित इकाई है.

परिवार के महत्वपूर्ण कार्य

परिवार नई महत्वपूर्ण कार्यों का निर्वहन करता है–

- यह सुरक्षा प्रदान करता है. निश्चित रूप से परिवार नवजात शिशुओं व बच्चों, किशोरों, बीमारों और बुजुर्गों की सबसे अच्छी देखभाल करता है.
- यह अपने सदस्यों को एक ऐसा भावनात्मक आधार देता है जो अन्यथा सम्भव नहीं. इस प्रकार की भावना बच्चों के स्वस्थ विकास के लिए अपरिहार्य है. दरअसल, परिवार एक प्राथमिक समूह है जो सदस्यों के बीच एक अंतरंगता व स्नेह के स्वतन्त्र प्रदर्शन की आज्ञा देता है.
- यह अपने सदस्यों को शिक्षित करता है जो पारिवारिक परिवेश में जीवन जीना सीखते हैं. बच्चों को समाज के नियम सिखाए जाते हैं और यह भी कि अन्य लोगों के साथ किस प्रकार मेलजोल रखना है व बुजुर्गों के प्रति आदर व उनकी आज्ञा का पालन किस तरह से करना है आदि.
- यह आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है. परिवार के प्रत्येक सदस्य की आधारभूत जरूरतें; जैसे–भोजन, आवास व कपड़ा उपलब्ध कराया जाता है. वे घर के कार्य व जिम्मेदारियों में हाथ बँटाते हैं.

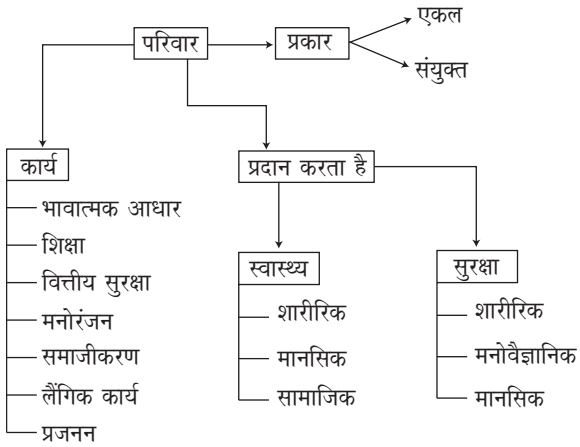

- यह मनोरंजन का स्रोत भी है. परिवार प्रसन्नता का स्रोत हो सकता है जहाँ बालक के विकास पर सबसे अधिक प्रत्यक्ष और महत्वपूर्ण प्रभाव माता-पिता का पड़ता है. वे विभिन्न स्थितियों में माता-पिता के प्रति भिन्न प्रकार से प्रतिक्रिया करते हैं. माता-पिता उनके कुछ व्यवहारों को शाब्दिक रूप से पुरस्कृत करके (जैसे–प्रशंसा करना) या अन्य मूर्त तरह से पुरस्कृत करके (जैसे–चॉकलेट या बच्चे की पसन्द की वस्तु का खरीदना) प्रोत्साहित करते हैं. वे कुछ अन्य व्यवहारों का अनुमोदन न करके निरुत्साहित करते हैं. वे बच्चों को भिन्न प्रकार की स्थितियों में रखकर उन्हें विध्यात्मक अनुभव, सीखने के अवसर और चुनौतियाँ प्रदान करते हैं. बच्चों से अन्योन्यक्रिया करते समय माता-पिता विभिन्न युक्तियाँ अपनाते हैं जिन्हें सामान्यतः पैतृक शैली कहा जाता है. प्राधिकृत, सत्तावादी और लोकतान्त्रिक या अनुज्ञात्मक पैतृक शैलियों में विभेद किया गया

है. शोध अध्ययन यह प्रदर्शित करते हैं कि माता-पिता के अपने बच्चों के प्रति व्यवहारों में *स्वीकृति* और *नियन्त्रण* की हद के विषय में बहुत भिन्नताएँ होती हैं. जीवन की वे स्थितियाँ भी जिनमें माता-पिता रहते हैं (गरीबी, बीमारी, कार्य-दबाव, परिवार का स्वरूप), उन शैलियों को प्रभावित करती हैं जो माता-पिता अपने बच्चों को समाजीकृत करने के लिए अपनाते हैं. दादा-दादी एवं नाना-नानी से समीपता तथा सामाजिक सम्बन्धों का ढाँचा, बच्चे के समाजीकरण में प्रत्यक्षतः या माता-पिता के माध्यम से बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं. सभी सदस्य एक-दूसरे से बातचीत कर सकते हैं, खेल सकते हैं व भिन्न-भिन्न गतिविधियाँ कर सकते हैं. ये गतिविधियाँ घरेलू कार्य से लेकर त्यौहार या फिर जन्म, सगाई व विवाह आदि की हो सकती हैं.

- परिवार बच्चों के समाजीकरण का कार्य भी करता है. माता-पिता बच्चों को लोगों के साथ मिल-जुलकर रहने, प्रेम करने, हिस्सेदारी, जरूरत के समय मदद व जिम्मेदारी निर्वहन का पाठ भी पढ़ाते हैं. परिवार बच्चों में मनोवृत्तियों व मूल्यों का पोषण करता है और उनकी आदतों को प्रभावित करता है. परिवारों में ही परम्परागत कौशल सिखाए जाते हैं. परिवार ही अपने नन्हें सदस्यों को स्कूल में औपचारिक शिक्षा के लिए तैयार करता है.
- परिवार यौन सम्बन्धी कार्य भी करता है जो प्रत्येक प्राणी की जैविक आवश्यकता है. परिवार का अर्थ विवाह है और सभी समाज विवाह के बाद स्त्री पुरुष के बीच यौन सम्बन्धों को स्वीकृति देते हैं.
- विवाहित पुरुष व महिला के शारीरिक सम्बन्धों के फलस्वरूप परिवार में प्रजनन का कार्य भी पूर्ण होता है. जन्म लेने वाले बच्चे समाज के भविष्य के सदस्य होते हैं.

परिवार के प्रकार

- संयुक्त परिवार
- एकल परिवार

हमारे देश में एक इकाई के रूप में परिवार का बहुत महत्व माना जाता है. भारतीय परिवार बहुधा स्थिर व बाल केन्द्रित होते हैं.

संयुक्त परिवार–संयुक्त परिवार कुछ एकल परिवारों से मिलकर बनता है और परिणामस्वरूप यह काफी बड़ा होता है. यह पति-पत्नी, उनकी अविवाहित लड़कियों, विवाहित लड़कों, उनकी पत्नियों व बच्चों से मिलकर बनता है. यह एक या दो पीढ़ियों के लोगों का समूह है, जो साथ रहते हैं.

संयुक्त परिवार की विशेषताएँ

संयुक्त परिवार की कुछ प्रारूपिक विशेषताएँ निम्न हैं–

- सभी सदस्य एक ही छत के नीचे रहते हैं.
- सभी सदस्यों की साँझी रसोई होती है.
- सभी सदस्य परिवार की सम्पत्ति के हिस्सेदार होते हैं. संयुक्त परिवार का सबसे बड़ा पुरुष परिवार का वित्त संचालन व सम्पत्ति देखता है. यानि परिवार का खर्च एक ही वित्त स्रोत से चलता है.
- सभी सदस्य पारिवारिक घटनाओं, त्यौहारों व धार्मिक उत्सवों में एक साथ शामिल होते हैं.
- परिवार की बेटियाँ शादी के बाद अपने पति के घर चली जाती हैं, जबकि बेटे घर में ही अपनी पत्नियों व बच्चों के साथ रहते हैं.
- संयुक्त परिवार में निर्णय घर के सबसे बड़े पुरुष सदस्य द्वारा लिए जाते हैं. घर की सबसे बड़ी महिला भी निर्णय लेने का कार्य कर सकती है, परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से.

परम्परागत रूप से संयुक्त परिवार ही हमारे समाज में पाए जाते थे. अब परिवर्तन आ रहा है, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में, परन्तु व्यापारिक व कृषि प्रधान घरानों में अभी भी संयुक्त परिवार की प्रथा जारी है. संयुक्त परिवार के कई लाभ हैं–

- यह परिवार के सदस्यों को मिलनसार बनाता है. काम, विशेषकर कृषि कार्य को बाँट कर किया जा सकता है.
- यह परिवार में बूढ़े, असहाय व बेरोजगारों की देखभाल करता है.
- छोटे बच्चों का लालन-पालन भलीभाँति होता है, विशेषकर जब दोनों माता-पिता कामकाजी हों.
- माता या पिता की मृत्यु हो जाने पर बच्चे को संयुक्त परिवार में पूरा भावनात्मक व आर्थिक सहारा मिलता है.
- संयुक्त परिवार में आर्थिक सुरक्षा अधिक रहती है.

संयुक्त परिवार की समस्याएँ

संयुक्त परिवार की कुछ समस्याएँ भी हैं–

- कभी-कभी महिलाओं को कम सम्मान दिया जाता है.
- अक्सर सदस्यों के बीच सम्पत्ति को लेकर या किसी व्यापार को लेकर विवाद उठ खड़ा होता है.
- कुछ महिलाओं को घर का सारा कार्य करना पड़ता है. उनको अपना व्यक्तित्व निखारने के लिए बहुत कम समय व अवसर मिलता है.

एकल परिवार–साधारणतया यह एक छोटी इकाई है, जिसमें पति-पत्नी व उनके अविवाहित बच्चे रहते हैं. कभी-कभार पति का अविवाहित भाई या बहन भी उनके साथ रह सकते हैं. तब यह एक **विस्तृत परिवार** होगा.

एकल परिवार में रहने के कुछ लाभ हैं–

- एकल परिवार के सदस्य साधारणतया अधिक आत्मनिर्भर होते हैं और वे आत्मविश्वास से भरे हुए व किसी भी काम में पहल करने में सक्षम होते हैं.
- एकल परिवारों में बच्चों को स्वयं निर्णय लेने के लिए उत्साहित किया जाता है जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है.
- सदस्यों के बीच गहरा भावनात्मक लगाव विकसित होता है. ऐसा अधिक एकान्त व आपसी मेल-मिलाप के अवसर मिलने के कारण सम्भव होता है जो एकल परिवारों में भलीभाँति उपलब्ध होते हैं.
- ऐसा देखा गया है कि जहाँ कोई समाज अधिक औद्योगिक व शहरी बन जाता है, वहाँ एकल परिवार होने की सम्भावना बढ़ जाती है. बड़े शहरों में एकल परिवारों की अधिकता का एक प्रमुख कारण आवासीय समस्या है. बड़े परिवार को रहने के लिए जगह भी ज्यादा चाहिए. यदि परिवारों को सुविधापूर्ण ढंग से रहना हो, तो उनके पास एकल परिवार में रहने के अलावा और कोई चारा नहीं है.

एकल परिवार की समस्याएँ

एकल परिवारों की समस्याएँ निम्नलिखित हैं–

- एकल परिवारों में नवविवाहित दम्पति को किसी बुजुर्ग का सहारा नहीं होता. उन्हें सलाह देने के लिए कोई भी अनुभवी व्यक्ति उपलब्ध नहीं होता.

- जब माता-पिता दोनों ही कामकाजी हों, तो बच्चों की देखभाल के लिए कोई नहीं रहता.
- बुरे समय में परिवार को कोई आर्थिक व भावनात्मक सहारा नहीं रहता.

एकल परिवारों में सामंजस्य, मिलजुलकर काम करना व सहयोग के मूल्य मुश्किल से ही सीखने को मिलते हैं.

बदलता पारिवारिक परिवेश

- औद्योगीकरण से परिवारों में कई बदलाव आए हैं. परिणामस्वरूप परिवार के सदस्यों की भूमिका व जिम्मेदारियों में भी बदलाव आया है. अब तक एक परम्परावादी परिवार में बेटा ही परिवार के व्यवसाय या पेशे को सँभालता था. पिता या पुरुष सदस्य ही धन कमाते थे और घर से बाहर के कार्यों के लिए जिम्मेदार होते थे. महिलाएँ घर व बच्चों की देखभाल करती थीं.
- आज बच्चे, लड़के व लड़कियाँ अधिक शिक्षित हैं और उनके पास नौकरियों के बेहतर अवसर भी हैं. उन्होंने अन्यत्र काम करने के लिए घर छोड़ दिए हैं. अक्सर वे ग्रामीण अंचलों व कस्बों से बड़े शहरों में काम के लिए जाते हैं. इसके परिणामस्वरूप भी एकल परिवारों की संख्या बढ़ी है.
- छोटे परिवारों के कारण जीवन की आवश्यकताएँ भी बदली हैं. उदाहरण के लिए उनकी राशन की जरूरतें संयुक्त परिवार की अपेक्ष कम होती हैं.
- अकेले होने के कारण महिलाओं को घर व बाहर दोनों की जिम्मेदारियों का निर्वहन करना पड़ता है. पुरुषों को भी घर के कामों जैसे बच्चों की देखभाल आदि में हाथ बँटाना पड़ता है. कभी-कभी महिलाएँ घर से बाहर जाकर नौकरी करती हैं व पैसा कमाने तथा घर और बच्चों की देखभाल की दोहरी जिम्मेदारी निभाती हैं. बच्चों को अधिक आत्मनिर्भर बनना पड़ता है. साथ ही घर की कुछ जिम्मेदारियों में भी हाथ बँटाना पड़ता है.
- पारिवारिक जीवन, जो पहले पुरुष प्रधान था, जहाँ पत्नी व बच्चों के कुछ ही अधिकार थे और जो अपनी राय तक व्यक्त नहीं कर सकते थे, अब बदल रहा है. एक आधुनिक घर में महिला को बहुत अधिक स्वतन्त्रता व सामाजिक महत्व प्राप्त है. बच्चों के भी अपने अधिकार हैं. उनकी रुचियाँ व इच्छाओं का सम्मान किया जाना चाहिए. पारिवारिक मसलों पर वे अपनी राय देने में भी सक्षम हैं.
- संयुक्त परिवारों में जो कार्य दादा-दादी, चाचा-चाची व भाई-बहनों के कारण विभाजित थे, वे एकल परिवारों में केवल माता-पिता पर ही केन्द्रित होते हैं.
- चूँकि एकल परिवार अपने बाकी के परिवार व सम्बन्धियों से काफी दूर रहता है, अतः पड़ोसी, सहकर्मी, मित्र आदि बहुत महत्वपूर्ण बन जाते हैं. परिवार के सदस्यों को स्वयं को उनके अनुरूप ढालने की आवश्यकता है.

मित्र समूह (Peer Group)

मध्य बाल्यावस्था की मुख्य विशेषताओं में से एक है, घर के बाहर सामाजिक जालक्रम का विस्तार. इस सन्दर्भ में मित्रता का बहुत अधिक महत्व हो जाता है.

- यह बच्चों को न केवल दूसरों के साथ होने का अवसर प्रदान करती है, बल्कि अपनी उम्र के साथियों के साथ सामूहिक रूप से विभिन्न क्रियाकलापों (यथा–खेल) को आयोजित करने का भी अवसर प्रदान करती है.
- सहभाजन, विश्वास, आपसी समझ, भूमिका स्वीकृति एवं निर्वहन जैसे गुण भी समकक्षियों के साथ अन्योन्यक्रिया के दौरान विकसित होते हैं.
- बच्चे, अपने दृष्टिकोण को दृढ़तापूर्वक रखना और दूसरों के दृष्टिकोण को स्वीकार करना और उनसे अनूकूलन करना भी सीखते हैं.
- सम-समूह के कारण आत्म-तादात्म्य का विकास बहुत सुगम हो जाता है. चूँकि बच्चों का सम-समूह के साथ सम्प्रेषण प्रत्यक्ष होता है, समाजीकरण की प्रक्रिया सामान्यतः निर्बाध होती है.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. परिवार के अध्ययन के लिए 'स्थान, कार्य और लोग' का सूत्र स्थापित करने वाले थे—
   (A) फ्रेडरिक लेप्ले (B) सी.एच. कूले
   (C) ई. डिमॉलिन्स (D) हेनरी डी टोर्विल
2. 'ओक्का' अथवा पितृवंशीय तथा पितृस्थानीय संयुक्त परिवार मौलिक समूह होता है—
   (A) टोडा में (B) संथाल में
   (C) एस्किमो में (D) कुर्ग में
3. मातृवंशीय (Matrilineal) एवं पितृवंशीय (Patrilineal) परिवार के वर्गीकरण का आधार है—
   (A) पति-पत्नी का आवास
   (B) श्रम का लिंगीय विभाजन
   (C) वंशक्रम (Ancestry)
   (D) पुरुष एवं स्त्री की शक्ति की विभिन्नता
4. उस पितृसत्तात्मक परिवार का नामकरण क्या होगा, जहाँ एक पुरुष अपनी पत्नी, बच्चे, सास एवं साली के साथ निवास करता है ?
   (A) संयुक्त परिवार
   (B) एकाकी परिवार
   (C) विस्तृत परिवार (Extended family)
   (D) बहुपति विवाही परिवार (Polyandrous)
5. एक-दूसरे के साथ अनन्य सहवास (Exclusive co-habitation) के अधिकार शामिल किए बिना एकल युग्मों के बीच विवाह को कहा जाता है—
   (A) सिनेडैसनियन परिवार (Synadasnian family)
   (B) दाम्पत्यमूलक परिवार (Conjugal family)
   (C) पितृतंत्रात्मक परिवार (Patriarchal family)
   (D) स्वैर परिवार (Promiscuous family)

6. 'तारवाड' (Tarwad) संघटित होता है स्त्री—
(A) उसके बेटों, बेटियों, बेटियों की बेटियों और बेटों से
(B) उसके पति, उसके बेटों और बेटों की बेटियों और बेटों से
(C) उसकी बेटियों के पतियों और बेटियों की बेटियों से
(D) उसके बेटों की पत्नियों और बेटियों से

7. सूची–I को सूची–II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग करते हुए सही उत्तर चुनिए—

सूची–I (परिवार)	**सूची–I (जातियाँ/जनजातियाँ)**
(a) धारवाड़	1. कुर्ग
(b) ओक्का	2. नायर
(c) नोक	3. गारो
(d) हलम	4. नम्बूदरी

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	4	3
(C)	2	1	3	4
(D)	1	2	4	3

8. निम्नलिखित में से किस-किसको जन्ममूलक परिवार (Family of orientation) में सम्मिलित किया जाता है ?
1. माता-पिता (One's parents)
2. पति-पत्नी (One's spouse)
3. सहोदर (One's siblings)
निम्नलिखित कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए—
कूट :
(A) 1, 2 तथा 3 (B) 1 तथा 2
(C) 2 तथा 3 (D) 1 तथा 3

9. सूची–I का सूची–II के साथ सुमेल कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग करते हुए सही उत्तर का चयन कीजिए—
सूची–I (लेखक)
(a) आई. पी. देसाई (b) ए. एम. शाह
(c) के. एम. कपाडिया (d) एम. एस. गोरे
सूची–II (पुस्तकें)
1. हाउसहोल्ड डाइमेन्सन ऑफ दि फैमिली इन इण्डिया
2. मैरिज एण्ड फैमिली इन इण्डिया
3. अर्बनाइजेशन एण्ड फैमिली
4. सम-एस्पैक्ट्स ऑफ फैमिली इन महुआ
5. वर्ल्ड रिवोल्यूशन एण्ड फैमिली पैटर्न
कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	1	2	3
(B)	4	5	2	3
(C)	1	4	5	2
(D)	3	5	4	2

10. निम्नलिखित में से यह विचार किसका था कि शोषित (Exploitative) समाज में परिवार एक वैचारिक अनुकूलन (Ideological conditioning) की युक्ति (Device) है ?
(A) डेविड कूपर (B) एडमण्ड लीच
(C) फैड्रिक एंजिल्स (D) आर.डी. लेंग

11. किस प्रकार का आवास विस्तृत परिवार के निर्माण में सहायक नहीं होता है ?
(A) पतिस्थानिकता (Virilocality)
(B) पत्नीस्थानिकता (Uxorilocality)
(C) मातुलस्थानिकता (Avunculocality)
(D) नवस्थानिकता (Neolocality)

12. निम्नलिखित में से कौनसा कथन यह स्पष्ट नहीं करता है कि घरेलू हिंसा इतनी प्रचलित क्यों है ?
(A) परिवार में संवेगात्मक अस्थिरता
(B) परिवार में हिंसा को पर्याप्त मात्रा में अनुमोदित किया एवं सहा जाता है
(C) पत्नी के साथ मारपीट करने की सामाजिक स्वीकृति
(D) परिवार के अन्दर हिंसा समाज में हिंसक व्यवहार के व्यापक प्रतिमानों (Broader patterns) का प्रतिबिम्ब है

13. जिस परिवार का निर्माण विवाह तथा बाद में पैदा हुए बच्चों से हुआ है उसकी निम्नलिखित में से कौनसी सही परिभाषा प्रस्तुत करता है ?
(A) जन्ममूलक परिवार (Family of orientation)
(B) प्रजननमूलक परिवार (Family of procreation)
(C) विस्तृत परिवार (Extended family)
(D) संयुक्त परिवार (Joint family)

14. भारत में निम्नलिखित में से प्रायः कौनसे प्रकार के लोगों में संयुक्त परिवार नहीं मिलते हैं ?
(A) नगरीय व्यापारी वर्ग (B) व्यवसायी वर्ग
(C) भूमिरहित मजदूर (D) ग्रामीण भूमिस्वामी वर्ग

15. भारत में संयुक्त परिवार की विशेषता का विस्तृत स्वजन समूह (Extended kin-group) के रूप में किसने वर्णन किया है ?
(A) ए. आर. देसाई (B) के. एम. कपाडिया
(C) इरावती कर्वे (D) ए. डी. रॉस

16. संयुक्त परिवार को मजबूती प्रदान करने वाले आधार कौन थे ?
1. सामान्य संयुक्त सम्पत्ति 2. पितृपूजा
3. अधिक संख्या 4. सामान्य निवास
नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर का चयन कीजिए—
कूट :
(A) 1 और 2 (B) 1 और 4
(C) 1, 2 और 4 (D) 2, 3 और 4

17. वेस्टरमार्क के अनुसार परिवार का प्रारम्भिक स्वरूप था—
(A) पितृसत्तात्मक
(B) मातृसत्तात्मक
(C) स्वछन्द सम्भोग पर आधारित
(D) लिंग साम्यवादी

18. परिवार की उत्पत्ति से सम्बन्धित 'यौन साम्यवाद' सिद्धान्त के प्रवर्तक हैं—
(A) वेस्टरमार्क (B) जॉनसन
(C) कालमार्क्स (D) मॉर्गन

19. 'द हिस्ट्री ऑफ ह्यूमन मैरिज' नामक पुस्तक के लेखक कौन हैं?
(A) टायलर (B) वेस्टरमार्क
(C) मॉर्गन (D) कपाडिया

20. सूची–I का सूची–II से मिलान कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट के अनुसार अपने उत्तर का चयन कीजिए—

सूची–I

(a) ओरिजन ऑफ फैमिली
(b) मैरिज एण्ड फैमिली इन इण्डिया
(c) अफ्रीकन सिस्टम ऑफ किनशिप एण्ड मैरिज
(d) द फैमिली

सूची–II

1. हैरिस
2. मॉर्गन
3. कपाडिया
4. रेडक्लिफ ब्राउन

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	4	2	1
(B)	4	1	2	3
(C)	4	3	2	1
(D)	4	1	2	3

21. "परिवार लिंग सम्बन्धों पर आधारित एक समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जोकि इतना छोटा और स्थायी होता है कि बच्चों का प्रजनन और पालन-पोषण समुचित रूप से कर सके." लेखक का चयन कीजिए—
(A) मैकाइवर तथा पेज (B) हेनरीमेन
(C) डी.एम. मजूमदार (D) मॉर्गन

22. किन जनजातियों में मातृसत्तात्मक परिवार होता है ? नीचे दिए गए कूटों में से चिह्नित कीजिए—
1. खासी
2. गोंड
2. मुडिया
4. गारो

कूट :
(A) 1 एवं 2 (B) 1 एवं 3
(C) 1 एवं 4 (D) 1, 2 एवं 3

23. मातृस्थानीय (Matrilocal) पितृस्थानीय (Patrilocal) तथा नवस्थानीय (Neolocal) परिवार के रूप में परिवार का वर्गीकरण किसने प्रस्तुत किया ?
(A) डब्ल्यू. जे. गुडे (B) एम.एन. श्रीनिवास
(C) एस.सी. दुबे (D) जी.एस. घुरिए

24. पी. कोलेन्डा ने भारत में नाभिकीय परिवार की कुछ संघटन कोटियाँ (Compositional) दी हैं. निम्नलिखित में से कौनसी एक कोलेन्डा द्वारा प्रस्तुत कोटियों में से नहीं है ?
(A) अनुपूरित नाभिकीय (Supplemented nuclear)
(B) उपनाभिकीय (Sub-nuclear)
(C) एकल व्यक्ति गृहस्थी (Single person household)
(D) अनुपूरित वंशज (Supplemented lineal)

25. निम्नलिखित में से कौनसी एक विशेषता परिवार को मातृ-सत्तात्मक तथा पितृसत्तात्मक परिवार में वर्गीकृत करती है ?
(A) पति या पत्नी का आवास
(B) लैंगिक श्रम विभाजन
(C) एक ही पूर्वज के वंशानुक्रम
(D) स्त्री तथा पुरुष की विभिन्न शक्तियाँ

26. मॉर्गन ने पाँच विभिन्न प्रकार के परिवार बताए हैं, वे हैं—
1. सिनड्यैस्मियन
2. समूह विवाही
3. समरक्त
4. एकविवाही
5. पितृतंत्रात्मक

नीचे दिए गए कूट में से उत्तर चुनकर मॉर्गन द्वारा यथा वर्णित इनके प्रकटन का सही क्रम बताइए—

कूट :
(A) 3, 2, 5, 1 और 4 (B) 2, 1, 3, 5 और 4
(C) 1, 2, 3, 4 और 5 (D) 3, 2, 1, 5 और 4

27. सूची–I (विद्वान्) को सूची–II (परिवार पर मत) से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची–I (विद्वान्)

(a) मॉर्गन (b) वेस्टरमार्क
(c) ब्रिफॉल्ट (d) मरडॉक

सूची–II (परिवार पर मत)

1. मानव समाज के प्रारम्भ में न तो विवाह था और न ही परिवार था.
2. पुरुषों द्वारा कब्जा जमाने की भावना से परिवार की उत्पत्ति हुई.
3. सारे पारिवारिक मामलों में माँ की सर्वोच्च सत्ता का महत्व है.
4. परिवार एक बहुप्रकार्यात्मक (Multi-functional) संस्था है.

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	3	4	1	2
(C)	1	4	3	2
(D)	3	2	1	4

28. परिवार के अपने अध्ययन में 'भूमिका सौदेबाजी' (Role bargaining) की अवधारणा का प्रयोग किसने किया है ?
(A) चार्ल्स कूले (B) टालकॉट पारसन्स
(C) राल्फ लिन्टन (D) गुडे

29. यह विचार किसका है कि वृहद् स्तरों पर परिवार लगभग पूर्णतया प्रकार्यविहीन हो गया है ?
(A) पारसन्स (B) गुडे
(C) मार्क्स (D) डेविस एवं मूर

30. यह तर्क किसने प्रस्तुत किया है कि 'आधुनिक औद्योगिक समाज में अलग-थलग एकाकी परिवार ही परिवार का सामान्य स्वरूप है ?
(A) मर्टन (B) पारसन्स
(C) मार्क्स (D) पैरी

31. यह मत किसने प्रस्तुत किया है कि सारे असन्तोष का स्रोत परिवार है ?
(A) मार्क्स (B) लीच
(C) दुर्खीम (D) कूले

32. मरडॉक ने यह मत प्रस्तुत किया है कि परिवार सभी समाजों में चार मूलभूत प्रकार्यों को सम्पन्न करता है. निम्नलिखित में से कौन एक उसकी सूची में सम्मिलित नहीं है ?
(A) सैक्स सम्बन्धी (B) आर्थिक
(C) मनोवैज्ञानिक (D) शैक्षिक

33. पारिवारिक संरचना की तुलना समाजशास्त्रियों द्वारा छह आयामों पर की जाती है. निम्न में से कौन एक उनमें सम्मिलित नहीं है ?
(A) पारिवारिक नीति (B) पारिवारिक स्वरूप
(C) विवाह स्वरूप (D) सत्ता प्रतिमान

34. "द डैथ ऑफ द फैमिली" के लेखक कौन हैं ?
(A) कूपर (B) लैंग
(C) लीच (D) मॉर्गन

35. यह तर्क किसने प्रस्तुत किया है कि "परिवार फैक्टरियाँ" हैं, जोकि मानव व्यक्तित्वों को उत्पादित करती हैं ?
(A) मॉर्गन (B) मैकाइवर
(C) डेविस (D) पारसन्स

36. निम्नलिखित पर विचार कीजिए–
1. संयुक्त सम्पत्ति 2. संयुक्त आवास
3. समान पूर्वज 4. लचीली सत्ता
उपर्युक्त में से कौनसी संयुक्त परिवार की प्रमुख विशेषताओं में सम्मिलित है ?
(A) 1 और 4 (B) 2, 3 और 4
(C) 1, 2 और 4 (D) 1, 2 और 3

37. निम्नलिखित पर विचार कीजिए–
1. वैवाहिक (Marital)
2. जननी जनकगत (Parental)
3. समरक्त (Consaguineal)
4. आनुष्ठानिक (Ritualistic)
परिवार में उपर्युक्त में से समाज में मान्यता प्राप्त विशिष्ट सम्बन्ध कौनसे हैं ?
(A) 1 और 2 (B) 2 और 3
(C) 1, 3 और 4 (D) 1, 2 और 3

38. 'एकान्तिक नाभिकीय परिवार' की अवधारणा किसकी है ?
(A) यूजीन लिंटवैक (B) कोलिन बेल
(C) टी. पारसन्स (D) आई. पी. देसाई

39. सूची–I को सूची–II से मिलाइये तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग करते हुए सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची–I
1. प्राणियों का प्रजनन 2. संस्कृति का संचरण
3. श्रम-विभाजन 4. प्रस्थिति प्रदान करना

सूची–II
(a) परिवार का आर्थिक कार्य
(b) परिवार का प्राणिशास्त्रीय कार्य
(c) परिवार का सांस्कृतिक प्रकार्य
(d) परिवार का सामाजिक प्रकार्य

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	3	4	1
(B)	3	1	2	4
(C)	2	4	1	3
(D)	3	4	2	1

40. परिवार को संघर्ष के एक केन्द्र के रूप में किसने देखा है ?
(A) कॉर्निश (B) मार्क्स
(C) मरडॉक (D) हार्टमान

41. जब हम एक परिवार को एक समूह के रूप में लेते हैं, तो उसे कहेंगे—
(A) एक संस्था (B) एक समिति
(C) एक समुदाय (D) एक समाज

42. किस प्रकार के परिवार विश्व के सभी समाजों में पाए जाते हैं ?
(A) विस्तृत परिवार (B) पितृवंशीय परिवार
(C) नाभिक या एकाकी परिवार (D) समरक्त परिवार

43. उस परिवार को क्या कहते हैं, जो पति-पत्नी और उनके आश्रित बच्चों से मिलकर बना है ?
(A) संयुक्त परिवार (B) समरक्त परिवार
(C) केन्द्रीय या नाभिक परिवार (D) पितृवंशीय परिवार

44. ऐसे परिवार को क्या कहते हैं जिस परिवार में तीन या अधिक पीढ़ियों के सदस्य साथ-साथ निवास करते हैं, जिनकी रसोई, पूजा-पाठ एवं सम्पत्ति सामूहिक होती है और जो सामान्य रक्त सम्बन्धों से सम्बन्धित होते हैं ?
(A) पितृसत्तात्मक परिवार (B) जन्ममूलक परिवार
(C) संयुक्त परिवार (D) विस्तृत परिवार

45. केरल में नायरों के संयुक्त परिवार को कहते हैं—
(A) सुसु (B) गोतुल
(C) तारवाड (D) इलाम

उत्तरमाला

1. (A)	2. (D)	3. (C)	4. (C)	5. (B)	6. (A)
7. (C)	8. (D)	9. (A)	10. (C)	11. (D)	12. (C)
13. (B)	14. (A)	15. (A)	16. (A)	17. (A)	18. (D)
19. (B)	20. (B)	21. (A)	22. (C)	23. (A)	24. (C)
25. (C)	26. (D)	27. (A)	28. (D)	29. (B)	30. (B)
31. (A)	32. (C)	33. (A)	34. (A)	35. (C)	36. (D)
37. (D)	38. (C)	39. (B)	40. (B)	41. (D)	42. (C)
43. (C)	44. (C)	45. (C)			

2

सम्बन्ध/नातेदारी

प्रत्येक समाज नातेदारी सम्बन्धों का ढाँचा प्रस्तुत करता है. अपने नाभिकीय परिवार के बाहर व्यक्ति के द्वितीयक एवं तृतीयक सम्बन्ध होते हैं. हर व्यक्ति के प्राथमिक सम्बन्धी तो उसी नाभिकीय परिवार में पाए जाते हैं. नातेदारी संस्कृति का वह हिस्सा है जो जन्म और विवाह के आधार पर बने सम्बन्धों एवं सम्बन्ध की अवधारणाओं एवं विचारों से सम्बन्धित होता है. नातेदारी संगठन व्यक्तियों के उस समूह को इंगित करता है जो या तो एक-दूसरे के रक्त सम्बन्धी होता है या वैवाहिक सम्बन्धी.

- **जी. डंकन मिचेल** के अनुसार, जब हम नातेदारी शब्द का इस्तेमाल करते हैं, तो हम लोग रक्त सम्बन्धियों एवं विवाह सम्बन्धियों को सन्दर्भित कर रहे हैं. रक्त सम्बन्धियों में सामान्यतः उन्हें शामिल किया जाता है जिनके बीच सामूहिक रूप से तथाकथित रक्त सम्बन्ध पाया जाता है.
- रक्त सम्बन्धी वह है जिसका या तो उस परिवार में जन्म हुआ है या उसे परिवार द्वारा गोद लिया गया हो.
- जबकि विवाह सम्बन्धी उसे कहते हैं जिसके सम्बन्ध का माध्यम विवाह हो. उदाहरण के लिए, पिता-पुत्र सम्बन्ध एक रक्त सम्बन्ध है, जबकि पति-पत्नी सम्बन्ध एक विवाह सम्बन्ध है.
- नातेदारी दो महत्वपूर्ण एवं सम्बन्धित उद्देश्यों की पूर्ति करता है–
  1. यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रस्थिति, प्रतिष्ठा एवं सम्पत्ति के हस्तान्तरण को सम्भव बनाता है तथा
  2. कुछ समाजों में यह प्रभावी सामाजिक समूह के निर्माण को कायम रखने में प्रभावी होता है.
- नातेदारी व्यवस्था परिवार एवं विवाह जैसी दो जुड़ी संस्थाओं का प्रतिफल है और यह जन्म, मृत्यु एवं पुरुष-स्त्री के शारीरिक सम्बन्ध से जुड़े सामाजिक व्यवहार का नियमन करता है.
- नातेदारी एक-दूसरे के प्रति अधिकारों तथा कर्तव्यों के बारे में तथा एक-दूसरे की अभिरुचियों एवं अपेक्षाओं के बारे में बतलाता है.
- ज्यादातर समाजों में जहाँ नातेदारी सम्बन्ध महत्वपूर्ण होते हैं वंशावली तय करने के स्पष्ट नियम होते हैं. वंश कई पीढ़ियों के लोगों को जोड़ता है.
- वंशावली के आधार पर यह बतलाया जा सकता है कि किस व्यक्ति की उत्पत्ति किस व्यक्ति से हुई है. वंशावली तय करने के कई तरीके हैं.

(क) एकपक्षीय वंश–माता-पिता में से जब केवल एक पक्ष को ही वंशावली में गिनने की प्रथा हो, तो उसे एकपक्षीय वंश कहते हैं. इसके भी दो रूप हैं–

(1) **पितृवंशीय**–इसमें वंश का निर्धारण या गणना केवल पिता या दादा जैसे पुरुष सम्बन्धियों से सम्बन्ध स्थापित करके किया जाता है. पितृवंश में पुत्रों के साथ-साथ पुत्रियों की गिनती भी की जाती है. वंश पिता या दादा के नाम से जाना जाता है.

(2) **मातृवंशीय**–इसमें वंश का निर्धारण माँ या नानी जैसी स्त्री सम्बन्धियों के साथ सम्बन्ध स्थापित करके किया जाता है. मातृवंश में पुत्रियों के साथ पुत्र की गिनती भी की जाती है. वंश माता या नानी के नाम से जाना जाता है.

(3) **द्विवंशीय**–यह भी एकपक्षीय वंश का ही एक रूप है, जिसमें मातृवंशीय एवं पितृवंशीय के गुण मिले रहते हैं. वंशावली का निर्धारण पिता या माता के एक ही पक्ष के आधार पर किया जाता है, परन्तु अलग-अलग उद्देश्यों के लिए अलग-अलग वंशावली तैयार की जाती है. उदाहरण के लिए, अचल सम्पत्ति के हस्तान्तरण के लिए एक पक्ष (पिता) एवं चल सम्पत्ति के हस्तान्तरण के लिए दूसरा पक्ष (माता) के साथ सम्बन्ध स्थापित कर वंशावली तैयार की जाती है.

(ख) द्विपक्षीय वंश–यह एकपक्षीय वंश नहीं होकर द्विपक्षीय वंश होता है. इसमें एक ही साथ माता और पिता, पुरुष पूर्वज एवं स्त्री पूर्वज दोनों की तरफ से (एक साथ, एक ही उद्देश्य के लिए) वंशावली तैयार की जाती है.

- भारत में सामान्यतः पितृवंशीय एवं मातृवंशीय दोनों प्रकार की व्यवस्थाएँ पाई जाती हैं.
- उत्तर भारत में पितृवंशीय व्यवस्था ज्यादा पाई जाती है.
- जनजातियों में संथाल एवं मुंडा जैसी जनजातियाँ पितृवंशीय हैं. बहुपति विवाह के रिवाज को मानने वाले टोडा लोग भी पितृवंशीय हैं.
- जनजातियों में उत्तर-पूर्व के खासी तथा गारो लोग मातृवंशीय व्यवस्था मानते हैं.
- केरल की नायर जाति मातृवंशीय व्यवस्था का सर्वोत्तम उदाहरण है.
- एकपक्षीय वंश समूह को गोत्र या कुल कहा जाता है.
- गोत्र या वंश नातेदारों का ऐसा समूह है, जिसमें सभी पूर्वजों के साथ सात कड़ियों के आधार पर वंशानुगत सम्बन्ध स्थापित किया जाता है.
- एक कुल कई वंशों के मिलने से बनता है.
- कुल नातेदारों का ऐसा समूह है जिसके सदस्य सामूहिक रूप से एक साझे पूर्वज से अपने को जोड़ते हैं, परन्तु वे ज्ञात वंशावली के आधार पर उस पूर्वज से सम्बन्ध नहीं जोड़ पाते.

- एकपक्षीय वंश समूह के सदस्य सामान्यतः कर्मकाण्ड तथा अनुष्ठानिक उत्सवों के अवसर पर साथ-साथ उपस्थित होते हैं.
- उत्तराधिकार के नियम अधिकांशतः वंशावली के द्वारा नियमित होते हैं.
- भारत के अधिकांश भाग में अभी हाल तक जमीन एवं घर जैसी अचल सम्पत्ति नजदीकी पुरुष सम्बन्धियों को हस्तान्तरित होती थी.
- हाल के कानूनी विधेयकों ने पिता की सम्पत्ति में पुत्री को भी अधिकार प्रदान किया है.

नातेदारी : पारिभाषिक शब्दावली

प्रसिद्ध मानवशास्त्री ए.आर. रैडक्लिफ ब्राउन का कहना है कि नातेदारी में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली अन्य विशेषताओं के अतिरिक्त एक निश्चित नातेदार के अधिकारों एवं कर्तव्यों के वर्गीकरण की ओर संकेत करता है. उनके पहले एल. एच. मॉर्गन ने कहा था कि नातेदारी शब्दावली हमारे सामाजिक सम्बन्धों के सन्दर्भ तथा मुहावरे प्रदान करता है. मॉर्गन ने नातेदारी में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दालियों की दो व्यवस्थाओं की चर्चा की है–(क) वर्गात्मक, (ख) वर्णनात्मक.

- वर्गात्मक व्यवस्था में नातेदारी में प्रयुक्त शब्दावली के अन्तर्गत एक ही शब्द के द्वारा भिन्न प्रकार के नातेदारी को वर्गीकृत या सम्बोधित किया जाता है.
- वर्णनात्मक व्यवस्था में हर नातदेारी शब्द केवल एक खास नातेदार एवं एक खास सम्बन्धी के लिए इस्तेमाल किया जाता है. उदाहरण के लिए, माँ के भाई को मामा, पिता के भाई को चाचा तथा पिता की बहन के पति को फूफा कहा जाता है.
- ज्यादातर समकालीन समाजों में दोनों प्रकार के (वर्गात्मक एवं वर्णनात्मक) शब्दों का उपयोग किया जाता है.
- नाभिकीय परिवार के अन्दर माँ, पिताजी जैसे–वर्णनात्मक शब्दों का उपयोग किया जाता है.
- उत्तर भारतीय नातेदारी शब्दावली तुलनात्मक रूप से वर्णनात्मक है. यह व्यक्ति के प्राथमिक सम्बन्धों का वर्णन करता है.
- पितृपक्षीय वंशावली को स्पष्ट करने के लिए चचेरे और फुफुरे तथा मातृवंशीय वंशावली को परिभाषित करने के लिए ममेरे एवं मौसेरे शब्दों का प्रयोग किया जाता है. जैसे भाई के पुत्र को भतीजा एवं बहन के पुत्र को भाँजा कहा जाता है.
- इसके विपरीत दक्षिण भारतीय नातेदारी शब्दावली में तुलनात्मक रूप से वर्गात्मक शब्दावली पर जोर दिया जाता है. यहाँ एक ही शब्द मामा के द्वारा माता का भाई, पत्नी का पिता एवं पिता की बहन का पति तीनों का बोध होता है.

विशिष्ट नातेदारी शब्दावली, प्रथाएँ एवं नातेदारी व्यवहार

समाज में व्यवस्था एवं मर्यादा बनाए रखने के लिए कुछ व्यवहारों को आवश्यक व्यवहार के रूप में सामाजिक मान्यता एवं स्वीकृति प्राप्त होती है. हँसी-मजाक का सम्बन्ध भी इसी प्रकार का एक मान्यता प्राप्त व्यवहार है. हँसी-मजाक के सम्बन्ध में दो सम्बन्धियों के बीच एक प्रकार की समानता एवं पारस्परिकता का सम्बन्ध होता है. उदाहरण के लिए, एक पुरुष का अपनी पत्नी की छोटी बहन (जीजा-साली) एवं एक स्त्री का अपने पति के छोटे भाई के साथ के सम्बन्ध (भाभी-देवर) को हँसी-मजाक का सम्बन्ध कहा जाता है. कुछ कृषक जातियों में पति की असामयिक मृत्यु के बाद भाभी का देवर से विवाह उत्तर भारत में देखा गया है. पत्नी की असामयिक मृत्यु के बाद जीजा-साली का विवाह तो उससे भी ज्यादा लोकप्रिय प्रथा है.

अन्य प्रकार के हँसी-मजाक के सम्बन्ध भी महत्वपूर्ण हैं. उदाहरण के लिए, कुछ समुदायों में दादा-दादी के साथ नाना-नानी के साथ भी बच्चों का भी हँसी-मजाक का सम्बन्ध होता है. यहाँ हँसी-मजाक के सम्बन्ध अनौपचारिकता, आत्मीयता एवं असीमित स्वतन्त्रता के माहौल में बच्चों के विकास में मदद करते हैं.

हँसी-मजाक के सम्बन्ध के विपरीत, एक प्रकार के निषेध का सम्बन्ध भी नातेदारी के बीच पाया जाता है. उदाहरण के लिए, एक स्त्री का अपने पति के बड़े भाई या पिता से निषेध का सम्बन्ध होता है. पति के पिता के श्वसुर (ससुर) एवं पति के बड़े भाई को जेठ या भैंसुर कहा जाता है.

टेकनोनामी

टेकनोनामी की प्रथा भारत के कई ग्रामीण समुदायों में काफी लोकप्रिय है. यह बच्चों के नाम के आधार पर माता-पिता के नामकरण की प्रथा है; जैसे–रामू की माँ (या सीता के पिताजी) इस प्रथा का एक निहितार्थ यह है कि कई समुदायों में एक स्त्री अपने ससुराल में अपनी पहली संतान के बाद ही पूर्ण सदस्य बन पाती है. फलस्वरूप उसकी पहचान में (प्रथम) संतान का नाम जुड़ना स्वाभाविक बन जाता है.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित में नातेदारी (Kinship) की सबसे अच्छी परिभाषा कौनसी है ?
   (A) वंशावली सम्बन्धों की सामाजिक मान्यता तथा अभिव्यक्ति
   (B) सामाजिक मान्यता प्राप्त सम्बन्ध
   (C) सांस्कृतिक अनुकूलित सम्बन्धों की मान्यता
   (D) सम्बन्धियों का समूह
2. नाइजीरिया की 'याको' जनजाति में निम्नलिखित में से किस एक प्रकार का वंशाक्रम पाया जाता है ?
   (A) मातृवंशीय (B) पितृवंशीय
   (C) दोहरा (D) द्विपक्षीय
3. जब एक दम्पत्ति को निवास के लिए वर अथवा वधू के माता-पिता के साथ रहने का विकल्प उपलब्ध हो, तो इस स्थिति को कहा जाता है–
   (A) पतिस्थानिक (B) मातृस्थानिक
   (C) उभयास्थानिक (D) मातुलस्थानिक
4. जब नातेदारी द्वैतीयक नातेदारी से एक अंश परे होती है तो उसे–
   (A) रक्त सम्बन्धी नातेदारी कहते हैं
   (B) प्राथमिक नातेदारी कहते हैं
   (C) द्वितीयक नातेदारी कहते हैं
   (D) तृतीयक नातेदारी कहते हैं

5. सलहज (साले की पत्नी), देवरानी (देवर की पत्नी) आदि सम्बन्ध निम्नलिखित में से किस प्रकार की नातेदारी है ?
   (A) प्राथमिक नातेदारी (B) द्वितीयक नातेदारी
   (C) तृतीयक नातेदारी (D) रक्त सम्बन्धी नातेदारी

6. नातेदारी में कुछ परम्पराएँ ऐसी बन जाती हैं कि उनकी उपेक्षा तथा बहिष्कार किया जाता है. इस प्रकार की नातेदारियों में एक दूरी बनी रहती है, जिसे–
   (A) परिहार (Avoidance) कहा जाता है
   (B) परिहास (Joking Kinship) कहा जाता है
   (C) मातुलेय (Avunculate) कहा जाता है
   (D) सह प्रसविता कहा जाता है

7. जिन सम्बन्धों का आधार निकटता होता है और जो सम्बन्ध दो व्यक्तियों को निकट लाते हैं, उन्हें किस प्रकार के सम्बन्ध कहते हैं ?
   (A) परिहास सम्बन्ध (B) माध्यमिक सम्बोधन
   (C) सह-प्रसविता सम्बन्ध (D) मातुलेय सम्बन्ध

8. भारतीय समाज में देवर-भाभी, जीजा-साला, साली-बहनोई, सलहज आदि के सम्बन्ध, निम्नलिखित में किसके अन्तर्गत आते हैं ?
   (A) मातुलेय सम्बन्धों के अन्तर्गत
   (B) सह प्रसविता सम्बन्धों के अन्तर्गत
   (C) माध्यमिक सम्बोधन के अन्तर्गत
   (D) परिहास सम्बन्धों के अन्तर्गत

9. नातेदारी की अभिव्यक्ति किसी माध्यम से होती है. भारत में स्त्रियाँ अपने पति का नाम नहीं लेतीं. वे अपने पति को पुत्र अथवा पुत्री के माध्यम से पुकारती हैं. जैसे बँटी के पापा आदि–
   (A) ये सम्बन्ध परिहास सम्बन्ध कहलाते हैं
   (B) ये सम्बन्ध माध्यमिक सम्बोधन कहलाते हैं
   (C) ये सम्बन्ध सह-प्रसविता सम्बन्ध कहलाते हैं
   (D) ये सम्बन्ध मातुलेय सम्बन्ध कहलाते हैं

10. निम्नलिखित में से कौनसा कथन सही है ?
   (A) नातेदारी भावात्मक सम्बन्धों पर आधारित पारिवारिक व्यवस्था है
   (B) नातेदारी रागात्मक सम्बन्धों पर आधारित पारिवारिक व्यवस्था है
   (C) नातेदारी आर्थिक सम्बन्धों पर आधारित पारिवारिक व्यवस्था है
   (D) नातेदारी धार्मिक सम्बन्धों पर आधारित पारिवारिक व्यवस्था है

11. निम्नलिखित में से कौनसा कथन सही है ?
   (A) नातेदारी के आधार सामाजिक अन्तःक्रिया तथा रक्त सम्बन्ध हैं
   (B) नातेदारी के आधार धार्मिक अन्तःक्रिया तथा रक्त सम्बन्ध हैं
   (C) नातेदारी के आधार राजनीतिक अन्तःक्रिया तथा वैवाहिक सम्बन्ध हैं
   (D) नातेदारी के आधार आर्थिक अन्तःक्रिया तथा रक्त सम्बन्ध हैं

12. नातेदारी व्यवस्था में परम्परागत आधार पर पाई जाने वाली दूरी को–
   (A) पितृसत्तात्मक कहते हैं
   (B) मातुलेय (Avanculate) कहते हैं
   (C) परिहार (Avoidance) कहते हैं
   (D) परिहास (Joking relations) कहते हैं

13. निम्नलिखित में से कौनसे परिहार (Avoidance) सम्बन्ध माने जाते हैं ?
   (A) सास-बहू (B) भाई-बहन
   (C) साली-जीजा (D) देवर-भाभी

14. विवाहमूलक स्वजनता या नातेदारी (Affinal Kinship) का सम्बन्ध, सामाजिक या कानूनी दृष्टि से–
   (A) मान्य वैवाहिक सम्बन्धों से प्रकट होता है
   (B) रक्त सम्बन्धों के द्वारा प्रकट होता है
   (C) मैत्री सम्बन्धों के द्वारा प्रकट होता है
   (D) जैविक सम्बन्धों द्वारा प्रकट होता है

15. माता-पिता एवं सन्तानों के बीच तथा सहोदरों (Siblings) के बीच सम्बन्धों को–
   (A) द्वितीयक नातेदारी कहते हैं
   (B) रक्तमूलक (Consanguineous) नातेदारी कहा जाता है
   (C) विवाहमूलक (Affinal) नातेदारी कहा जाता है
   (D) तृतीयक नातेदारी कहते हैं

16. यदि एक व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति (जैसे 'क') से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित है, तो वह 'क' का–
   (A) प्राथमिक (Primary affinal) नातेदार होता है
   (B) द्वितीय नातेदारी होता है
   (C) तृतीय नातेदारी होती है
   (D) नातेदारी नहीं है

17. किसी व्यक्ति के पिता का भाई (चाचा या ताऊ) या उस व्यक्ति की सौतेली माँ (Step-mother) को (उस व्यक्ति का)–
   (A) प्राथमिक (स्वजन), नातेदारी कहते हैं
   (B) द्वैतीयक स्वजन कहते हैं
   (C) तृतीय स्वजन कहते हैं
   (D) द्वितीय नातेदारी (स्वजन) कहा जाता है

18. आधुनिक परिवारों में नातेदारी (स्वजनता) माता एवं पिता दोनों के जन्म के परिवारों (Parent's family of origin) के साथ जोड़ी जाती है, ऐसे परिवार को–
   (A) पितृ-बन्धु (Agnate) कहते हैं
   (B) द्विपक्षीय (Bilateral) समूह कहा जाता है
   (C) एक-पक्षीय समूह (Unilateral groups) कहा जाता है
   (D) मातृ-स्वजन (Uterine Kin) कहा जाता है

19. जो वंशानुक्रमण की दो में से एक रेखा (Line of descent) को पूर्णतः अनदेखी कर देते हैं, उन्हें–
   (A) एकपक्षीय (Unilateral groups) समूह कहा जाता है
   (B) द्विपक्षीय समूह कहा जाता है
   (C) सीमित समूह कहा जाता है
   (D) व्यापक समूह कहा जाता है

उत्तरमाला

1. (A)	2. (C)	3. (C)	4. (D)	5. (C)	6. (A)
7. (A)	8. (D)	9. (B)	10. (A)	11. (A)	12. (C)
13. (A)	14. (A)	15. (B)	16. (A)	17. (D)	18. (B)
19. (A)					

3

कार्य एवं खेल

खेल बच्चे की स्वाभाविक क्रिया है. भिन्न-भिन्न आयु वर्ग के बच्चे विभिन्न प्रकार के खेल खेलते हैं. ये विभिन्न प्रकार के खेल बच्चों के सम्पूर्ण विकास में सहायक होते हैं. खेलों के प्रकारों में अन्वेषणात्मक, सरंचनात्मक, काल्पनिक और नियमबद्ध खेल शामिल हैं. खेलों में सांस्कृतिक विभिन्नताएँ भी देखी जाती हैं. खेल से बच्चों का शारीरिक, संज्ञानात्मक, संवेगात्मक, सामाजिक एवं नैतिक विकास को बढ़ावा मिलता है, किन्तु अभिभावकों की खेल के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति एवं क्रियाकलाप ने बुरी तरह प्रभावित किया है. अतः यह अनिवार्य है कि शिक्षक और माता-पिता खेल के महत्व को समझें.

- खेल से मनुष्य की मनोवैज्ञानिक जरूरतें पूरी होती हैं तथा वह मनुष्य को सामाजिक कौशलों के विकास का भी अवसर देता है.
- पियाजे के अनुसार खेल बच्चों की मानसिक क्षमताओं के विकास में भी एक बड़ी भूमिका निभाते हैं. पहले चरण में बच्चा वस्तुओं के साथ संवेदन प्राप्त करने व कार्य संचालन करने का प्रयास करता है.
- दूसरे चरण में बच्चा कल्पनाओं को रूप देने के लिए वस्तुओं को किसी के प्रतीक के रूप में उपयोग करने लगता है.
- अन्तिम चरण में (7 से 11 वर्ष) काल्पनिक भूमिकाओं के खेलों की तुलना में बच्चा नियमबद्ध खेल (या क्रीड़ाओं) में संलग्न रहता है.
- खेलों से तार्किक क्षमता व स्कूल सम्बन्धी कौशलों को विकसित होने में मदद मिलती है.
- वाइगोत्स्की के विचारों से प्रेरित शोधकर्ता यह नहीं मानते कि खेलों में उम्र के साथ सहज परिवर्तन हो जाता है. वे वयस्कों व सामाजिक सन्दर्भों से मिलने वाले मार्गदर्शन को इसके लिए महत्वपूर्ण मानते हैं. उनके अनुसार बच्चों के खेल के स्तर को वयस्क बढ़ा सकते हैं.
- वाइगोत्स्की के अनुसार, जटिल भूमिकाओं वाले खेलों में बच्चों का अपने व्यवहार को संगठित करने का बेहतर व सुरक्षित अवसर मिलता है जो वास्तविक स्थितियों में नहीं मिलता. इस तरह बच्चे के लिए निकट विकास का क्षेत्र बनाते हैं. स्कूली स्थिति की तुलना में खेल के दौरान बच्चों की एकाग्रता, स्मृति आदि उच्चतर स्तर पर काम करती हैं. खेल में बच्चे की नई विकास मान दक्षताएँ पहले उभर कर आती हैं. खेल नाटकों में बच्चा अपने आन्तरिक विचार के अनुसार काम करता है और मूर्त रूप में दिखने वाली चीज़ों से बँधा नहीं रहता. यहीं से उसमें अमूर्त चिन्तन व विचार करने की तैयारी होने लगती है. यह लेखन की भी तैयारी होती है, क्योंकि लिखित रूप में शब्द वस्तु जैसा नहीं होता, उसके विचार का प्रतीक होता है.
- जितनी उम्र तक खेल में जटिल और विस्तृत भूमिकाओं व भाषा का प्रयोग होता है. वह बच्चे के विकास के लिए एक प्रमुख गतिविधि बनी रहती है. यह स्थिति 10-11 साल तक के बच्चों में कम रह सकती है. धीरे-धीरे इसका महत्व कम होने लगता है. शिक्षक बच्चों को खेलने का पर्याप्त समय व साधन देकर विषयों का सुझाव देकर, झगड़ों का समाधान करके खेल को समृद्ध बना सकते हैं.
- खेल यकीनन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके जरिए हम और जानवर भी तरह-तरह के अनुभवों को जाँचते हैं, परखते हैं और ये देखते हैं कि उन अनुभवों का प्रयोग हम दूसरी परिस्थितियों में विभिन्न उद्देश्य के लिए इस्तेमाल करते हैं.
- विद्यार्थियों के मानसिक व शारीरिक विकास के लिए शिक्षा के साथ-साथ खेलों का भी विशेष महत्व है. खेलकूद व्यक्ति के बहुमुखी विकास के लिए आवश्यक है. स्वास्थ्य की दृष्टि से खेलकूद के कई लाभ हैं–इससे शरीर की माँसपेशियाँ एवं हड्डियाँ मजबूत रहती हैं. रक्त का संचार सुचारु रूप से होता है. पाचन क्रिया सुदृढ़ रहती है. शरीर को अतिरिक्त ऑक्सीजन मिलती है और फेफड़े भी मजबूत रहते हैं. खेलकूद के दौरान शारीरिक अंगों के सक्रिय रहने के कारण शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ जाती है. इस तरह खेल मनुष्य के शारीरिक विकास के लिए आवश्यक है.
- खेल केवल मनुष्य के शारीरिक ही नहीं मानसिक विकास के लिए भी आवश्यक है. इससे मनुष्य में मानसिक तनावों को झेलने की क्षमता में वृद्धि होती है. खेलकूद की इसी महत्ता को स्वीकार करते हुए स्वामी विवेकानन्द ने कहा था, ''यदि तुम गीता के मर्म को समझना चाहते हो, तो खेल के मैदान में जाकर फुटबाल खेलो.'' कहने का तात्पर्य यह है कि खेलकूद द्वारा शरीर को स्वस्थ करके ही मानसिक प्रगति हासिल की जा सकती है.
- महान् दार्शनिक प्लेटो ने कहा था, ''बालक को दण्ड की अपेक्षा खेल द्वारा नियन्त्रित करना कहीं अधिक अच्छा होता है. बाल्यावस्था से लेकर किशोरावस्था का दौर व्यक्ति के शारीरिक ही नहीं, मानसिक विकास की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है. इस दौरान यदि उसकी ऊर्जा का सदुपयोग न हो, तो उसके गलत राह पर चल पड़ने की सम्भावना बनी रहती है.'' इसलिए अच्छे शैक्षणिक संस्थानों में अवकाश के समय बच्चों को खेलकूद में

(For Class VI-VIII)

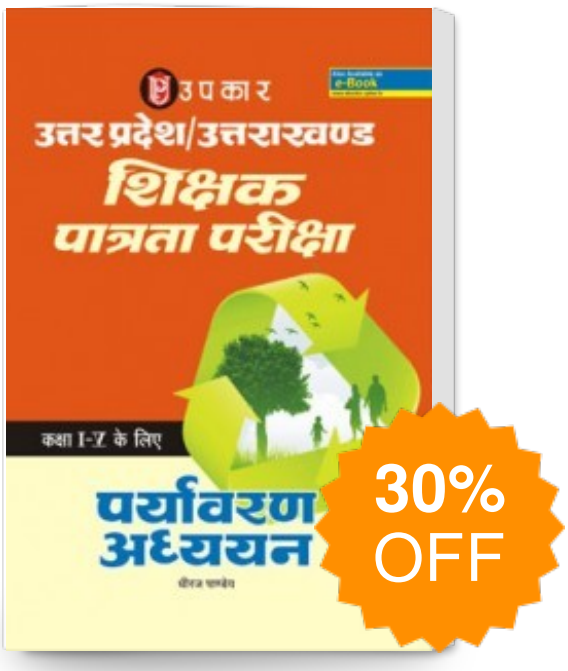

Publisher : Upkar Prakashan ISBN : 9789386791566 Author : Dheeraj Pandey

Type the URL : http://www.kopykitab.com/product/13479

Get this eBook